

‘पर्यावरण का नया परिदृश्य और ‘मरंग गोडा नीलकंठ हुआ’

विजयलक्ष्मी मिश्रा

(शोध छात्रा, हिंदी विभाग)

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

शोध सारांश - आधुनिक विकास और औद्योगीकरण ने हमेशा प्रकृति और आदिवासियों को ही अपना शिकार बनाया है। हिंदी उपन्यास परंपरा में मुंशी प्रेमचंद जहां कृषक जीवन को केंद्र में रखकर अपनी रचनाएं करते थे, फणीश्वर नाथ रेणु ने आंचलिक जीवन को केंद्र में रखा, वहीं समकालीन उपन्यासकारों ने समसामयिक मुद्दों को अपने उपन्यास का केंद्रीय विषय बनाया है। इन्हीं में से एक महुआ माजी ने अपने उपन्यासों ‘मैं बोरीशइला और मरंग गोडा नीलकंठ हुआ’ के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की गंभीर मानवीय और पर्यावरणीय समस्याओं को अपने उपन्यास में स्थान दिया है।

‘मरंग गोडा नीलकंठ हुआ’ इसी विकास-विमर्श की आलोचना करता हुआ यह उद्घाटित करता है कि आधुनिकता का दावा करने वाला राज्य और कॉर्पोरेट तंत्र आदिवासी समाज को केवल संसाधन के रूप में ही देखा है, ना की जीवंत प्राकृतिक धरोहर के रूप में। उपन्यास यह स्पष्ट करता है कि जंगल के बिना आदिवासी का अस्तित्व उतना ही संभव है जितना पानी के बिना मछली का, परंतु विकास की योजनाओं में इस जैव संस्कृति यथार्थ के लिए कोई स्थान नहीं है।

यह उपन्यास 21वीं सदी के भारतीय कथा साहित्य में की एक ऐसी कृति है जो तथाकथित आधुनिक विकास की अंधी दौड़ के पीछे भयानक, वीभत्स और विनाशकारी चेहरों को बेनकाब करती है। उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने विकास के नाम पर आदिवासियों के जल, जंगल और जमीन को एक सुलगते हुए नर्क और खाली कब्रिस्तान में तब्दील होने की गाथा का अत्यंत प्रमाणिक, वैज्ञानिक शोध और गहरी संवेदनशीलता के साथ वर्णन किया है। यह उपन्यास वैश्विक मंच पर चल रही पर्यावरणीय बहसों को भारतीय धरातल और विशेष रूप से देश के सबसे वंचित तबके के जीवन के साथ जोड़ कर देखता है।

उपन्यास का शीर्षक अत्यंत प्रतीकात्मक है। समुद्र-मंथन के विष को शिव द्वारा पी लेने की कथा की भांति, मरंग गोडा, देश के विकास के लिए यूरेनियम खनन से निकलने वाले विकिरण और प्रदूषण रूपी विष को अपने भीतर समाहित करता है। 1967 से आरंभ हुए खनन ने हजारों लोगों को रेडियोधर्मी प्रभाव का शिकार बनाया। यह आबादी ऊर्जा उत्पादन के लिए विष पीती रही और स्वयं ‘नीलकंठ’ बनकर विनाश के कगार पर पहुंच गई।

बीज शब्द - यूरेनियम, रेडियोधर्मी, वैश्वीकरण, डंपिंग स्टेशन, विकिरण, औद्योगिकरण टेलिंग डैम।

प्रस्तावना -

महुआ माजी का उपन्यास ‘मरंग गोडा नीलकंठ हुआ’ का प्रकाशन 1912 में हुआ। यह उपन्यास अंग्रेजी, बांग्ला, पंजाबी सहित कई भाषाओं में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र सगेन है, जिसके दादाजी उसे पत्थरों का डॉक्टर बनना चाहते थे। यह वही पत्थर है जिसे पीस कर यूरेनियम बनाया जाता था और ‘मरंग गोडा’

वही स्थान है जहां यूरेनियम का खनन होता है। यह एक आदिवासी बहुल क्षेत्र है। सगेन जो कहानी का मुख्य पात्र है, वह समय के साथ-साथ अनुभव करता है कि उसके क्षेत्र की कुछ चीज धीरे-धीरे बदल रही है। स्थानीय लोग पत्थरों की खदान में नौकरी करते थे जिससे उनकी आर्थिक स्थिति थोड़ी ठीक हो जाती थी। यह वही खदान है जहां पत्थरों को पीसा जाता है और उनसे यूरेनियम निकाला जाता है।

यूरेनियम एक भारी और रेडियोधर्मी धातु है, जिसका मुख्य उपयोग परमाणु ऊर्जा और बिजली उत्पादन के लिए किया जाता है। चिकित्सा और विज्ञान के क्षेत्र में कुछ रेडियो आइसोटोप और कैंसर के उपचार से जुड़े अनुसंधान कार्यों में इसका उपयोग किया जाता है। यही कारण है यूरेनियम बहुत ही मूल्यवान है। यह पीला पाउडर बड़े-बड़े डब्बे में भरकर शहर भेजा जाता है और उसके प्रसंस्करण के बाद जो अपशिष्ट बचता है उसे पास के गांव में डाल दिया जाता है, जिसमें बड़े-बड़े पत्थरों के टुकड़े और धूल इत्यादि हैं। धूल से गांव में एक सफेद मैदान बन जाता है जिसमें बच्चे खेलते हैं।

जब बरसात होती है तो यही धूल पानी के साथ बह कर नदियों और तालाबों में चला जाता है। जो बड़े-बड़े पत्थर हैं उनका उपयोग ग्रामीण अपने घरों को बनाने में करते हैं। पढ़ाई पूरी करने के बाद सगेन पर घर की जिम्मेदारी आ जाती है, खदान कंपनी में नौकरी के लिए इलेक्ट्रिशियन की ट्रेनिंग पूरी करनी थी। ट्रेनिंग के दौरान सगेन कंपनी के पुस्तकालय में बैठकर पढ़ाई करता है। वहां यूरेनियम से संबंधित काफी पुस्तक थी। वहां अध्ययन के दौरान उसे यूरेनियम की विनाशकारी शक्ति का पता चलता है” उसे यह तो थोड़ा बहुत पता था कि यूरेनियम से ही अणु बम और हाइड्रोजन बम बनाए जाते हैं, जिसकी चपेट में आने से सैकड़ों जाने जाती हैं, मगर यह नहीं पता था कि इससे होने वाले विकिरण का प्रभाव इतना विध्वंसकारी होता है कि बम विस्फोट के बाद यह प्राणियों पर दुष्प्रभाव डालता है। नवजात शिशु को विकलांग बनाने की क्षमता रखता है। कैंसर जैसी लाइलाज बीमारियों से नई पीढ़ियों को तबाह करने की कुव्वत रखता है और तभी उसे अपनी ‘मरंग गोडा’ के लोगों में होने वाले विकलांगता तथा अन्य विचित्र बीमारियों का राज समझ में आने लगा।”¹

सगेन ने स्कूल की पढ़ाई में भले ही ध्यान ना दिया हो पर वह यूरेनियम के बारे में बहुत ध्यान से पढ़ता है “रेडियो क्षरण के दौरान दो तरह के विद्युतीय कण निकलते हैं। अल्फा तथा बीटा कण, इसके अतिरिक्त अत्यंत शक्तिशाली गामा किरणें भी उत्पन्न होती हैं। गामा किरणें ‘एक्स रे’ की तरह रोशनी की रफ्तार में चलने वाली शुद्ध ऊर्जा तरंगें होती हैं। अल्फा, बीटा और गामा किरणें शरीर में प्रवेश करके एक तरह की विकृति उत्पन्न करती हैं, यह हमारे शरीर के जिंदा कोशिकाओं में प्रवेश करके उनमें जेनेटिक विघ्न पैदा करती हैं।”² यह उपन्यास किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं है बल्कि यह वैश्वीकरण के दौर में आदिवासी समाज की साझा त्रासदी को सामने लाने वाली एक महत्वपूर्ण साहित्यिक कृति है। यह उपन्यास स्पष्ट करता है कि जिस प्रकार खनन, औद्योगिकरण और तथाकथित विकास के नाम पर जादूगोड़ा के आदिवासी विकिरण, विस्थापन और प्रदूषण के शिकार हुए हैं, इस प्रकार दुनिया के अन्य हिस्सों जापान, अमेरिका में भी मूल निवासी समुदायों को इसी के समान संकटों का सामना करना पड़ रहा है।

वैश्वीकरण ने पूंजी और तकनीक की गति को तो तेज किया है, किंतु इसके दुष्परिणाम सबसे अधिक उन समुदायों पर पड़ रहे हैं, जिनका जीवन प्रकृति-आधारित है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लाभ के लिए आदिवासी समाज को उनके स्थान से वंचित कर दिया जाता है। इस उपन्यास में प्रस्तुत विकिरण जनित बीमारियां पर्यावरणीय असंतुलन विस्थापन और संस्कृति विघटन इसी वैश्विक आर्थिक संरचना की परिणति

बढ़ते औद्योगिकरण और उससे उपजे बाजारवाद में सबसे पहले पर्यावरण को ही अपना ग्रास बनाया है। ‘मरंग गोडा’ जहां से यूरेनियम का खनन होता था, वहां शुरुआत में सब कुछ ठीक रहा है, पर समय के साथ परिदृश्य बदलने लगता है। सगेन की बड़ी मां जो संतानहीन थी, उनकी निःसंतानता का कारण विकीरण ही था पर

आदिवासी अज्ञानता के कारण निःसंतान महिलाओं को डायन करार कर देते थे, जिससे उनका जीवन संकट में आ जाता था। महुआ माजी इस निःसंतानता के वैज्ञानिक कारणों को उद्घाटित करते हुए लिखती हैं -

“विकिरण जीवित प्राणी के जीवन में छेड़छाड़ तो करता ही है, यह स्त्री पुरुष की जनन क्षमता को भी प्रभावित करके उन्हें बांझ बना देने की ताकत रखता है। जो प्राणी विकिरण या रेडियोधर्मिता या रेडिएशन के जितना संपर्क में आता है उतना ही प्रभावित होता है, एक ही सेल में लाखों म्यूटेशन पैदा कर सकता है। मनुष्य के सेल में करीब 3.5 खरब डीएनए के जोड़े होते हैं।”³

उपन्यास के नायक सगेन के माध्यम से लेखिका मानती है कि यूरेनियम की खोज बेशक एक उपलब्धि है, लेकिन इसकी जो कीमत है, वह मंजूर नहीं है। इसके लिए ना जाने कितने मासूमों के स्वास्थ्य के साथ समझौता किया गया है और न जाने कितनों को बर्बाद करने की क्षमता रखता है। इस उपन्यास में लेखिका इस बात पर ध्यान आकर्षित करती है की पूरी दुनिया में जहां यूरेनियम खदानें हैं जैसे-अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका हर जगह के आदिवासी किसी न किसी रूप में पीड़ित व प्रताड़ित है। यह एक विडंबना है कि अधिकतम यूरेनियम खदानें, परमाणु रिएक्टर या उसके अपशिष्ट फेंके जाने वाले टेलिंग डैम आदिवासी इलाकों में ही होते हैं।

‘मरंग गोडा’ की जगह मनुष्य के साथ-साथ पशु - पक्षी, पेड़-पौधे सबके लिए हानिकारक है। लेखिका बताती है कि टेलिंग डैम से मात्र 50 फीट की दूरी पर बसा यह गांव, अंतर्राष्ट्रीय मानक के खिलाफ है और वहां रहना तो बहुत खतरनाक है। इस बात पर भी आक्रोश है कि चंद पैसे के लिए आदिवासियों से खदान में काम कराया जा रहा है और उनकी सुरक्षा का कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। जिस कारण उस प्रदेश में बसे आदिवासियों को अनेक प्रकार की बीमारियां हो रही है।

उपन्यास में यह बताया गया है की प्रकृति के लगातार दोहन से वह स्थान प्रदूषित हो गया है, वहां के जल, जंगल, जमीन सब यूरेनियम के कारण दूषित हो गए हैं। लेखिका ने बताया है की खदान से निकली पीली धूल वहां के लोगों को बीमार कर रही है। वहां विचित्र बच्चों का जन्म हो रहा है। किसी का सर सामान्य रूप से बड़ा है, गाय, बकरियों के सर सड़ गल कर गिरने लगे हैं। विकास के नाम पर कैसे लोगों के जीवन में जहर घोला जा रहा है, लेखिका हमें ऐसे खतरों से सावधान करती है। प्रकृति से छेड़छाड़ मनुष्य के जीवन को नारकीय बना देता है। यहां दोष सिर्फ अधिकारियों का नहीं है सरकार का भी दोष है। यूरेनियम कितना घातक है यह जानते हुए भी कोई सुरक्षा मानक निर्धारित नहीं किया गया है। खदान कर्मचारियों को कोई सुरक्षा पोशाक नहीं दी जाती है। जो भी मजदूर यूरेनियम खदान में काम करते हैं वह सीधे विकिरण के संपर्क में आते हैं। उनमें से कितनों को तो विकिरण की मात्रा को रिकॉर्ड करने वाला यंत्र ‘डोजीमीटर’ भी पहनने के लिए नहीं दिया जाता है, उस यंत्र के बिना कैसे पता चलेगा कि व्यक्ति को विकिरण की कितनी मात्रा मिल चुकी है और वह खदान में काम करने के लिए दोबारा जा सकता है या नहीं। इसी कारण मजदूर खदान में काम करते समय विकिरण की बलि बेदी पर चढ़ जाता है।

लेखिका ने उपन्यास में जो सबसे गंभीर और जानलेवा पर्यावरणीय संकट को रेखांकित किया है, वह यूरेनियम के खनन से निकलने वाला अदृश्य रेडियोधर्मी विकिरण। सामान्य प्रदूषण जैसे धुआं, प्लास्टिक या कचरा आंखों से दिखाई देता है और समाज उसके प्रति सजग हो जाता है, परंतु परमाणु प्रदूषण एक ऐसा अदृश्य हत्यारा है जो बिना किसी आहट के पूरी पारिस्थितिकी को भीतर ही भीतर खोखला कर देता है। खदानों से यूरेनियम निकालने के बाद बचने वाले अत्यधिक खतरनाक और रेडियोधर्मी मलबे को जिस तरह बस्तियों के ठीक बगल में खुले में छोड़ दिया जाता है, वह इस तबाही का मुख्य स्रोत है। गर्मियों के दिनों में जब इन तालाबों का पानी सूख जाता है तो तेज हवाओं के साथ यूरेनियम के बारीक धूल कण उड़ कर समूचे वायुमंडल में फैल जाते हैं।

सांस के जरिए यह प्रदूषित हवा वहां के निवासियों पशु, पक्षियों के फेफड़ों में पहुंचती है, तो उनके जीवन को धीरे-धीरे नष्ट करना शुरू कर देती है।

इस विकिरण ने ना केवल वायु को संक्रमित किया है, बल्कि मिट्टी की नैसर्गिक उर्वरा शक्ति को भी पूरी तरह सोख लिया है, जिससे फसलों का प्राकृतिक चक्र और पेड़ पौधों का विकास अवरूद्ध हो गया है। वायुमंडल के साथ-साथ जल पारिस्थितिकी पर भी इसका प्रभाव अधिक डरावना है। पानी जिसके बिना किसी भी प्राणी का जीवन संभव नहीं है 'मरंग गोडा' में वह भी मृत्यु का पर्यायवाची बन चुका है। यूरेनियम खदानों और उनसे निकलने वाले कचरे से होने वाला एसिडिक और रेडियोधर्मिक रिसाव सीधे तौर पर सुवर्ण रेखा जैसी पवित्र स्थानीय नदियों और प्राकृतिक जल धाराओं में मिल रहा है। इसके साथ ही जमीन के भीतर किए जाने वाले विस्फोटों के कारण यूरेनियम और अन्य भारी धातु जमीन में रिस कर भूजल स्तर तक पहुंच गई है, जिसके कारण भूजल का पानी भी पीने योग्य नहीं रह गया है।

नदियों में विकिरण के परिणामस्वरूप मेंढक, मछली अन्य जलीय जीव भी बड़े पैमाने पर सामूहिक रूप से मर रहे हैं। विकिरण के प्रभाव के कारण खाद्य श्रृंखला प्रभावित हो रही है जिसका सीधा प्रभाव मनुष्य पर पड़ता है, जो अपनी आजीविका और पोषण के लिए नदियों पर निर्भर हैं। उपन्यास एशिया के सबसे घने और खूबसूरत वनों में सुमार 'सात सौ पहाड़ियों की भूमि' यानी 'सरंडा' के जंगलों के विनाश से जुड़ा है। यूरेनियम और लौह अयस्क की खदानों के लिए, चौड़ी सड़कों की आवश्यकता है और बड़े-बड़े कारखाने की स्थापना के लिए साल, महुआ आदि पेड़ों को बहुत बेरहमी से काटा जाता है। वनों की इस अंधाधुंध विनाश ने प्राकृतिक गलियारों को नष्ट कर दिया है। इसके परिणामस्वरूप मानव-पशु का एक नया द्वंद शुरू हो गया है। वन्य जीव अपने प्राकृतिक आवास से वंचित होकर मनुष्य की बस्ती में चले आते हैं, यह उनकी विवशता है।

भौतिक और शारीरिक विनाश के साथ-साथ एक और विनाश होता है जिसे सांस्कृतिक पर्यावरण का विनाश कहते हैं। जब आदिवासियों को उनके पैतृक भूमि से विस्थापित किया जाता है, तो वह केवल अपनी जमीन ही नहीं खोते हैं बल्कि पहचान, लोकगीत, अपनी भाषा अपने पूजा स्थल (सरना स्थल) को भी हमेशा के लिए खो देते हैं। पर्यावरण विनाश का सबसे ज्यादा प्रभाव महिलाओं पर पड़ता है, पानी की खोज में मिलो दूर तक भटकना, सूखी लड़कियां इकट्ठा करना, असाध्य बीमारियों से जूझते परिवार की देखभाल करना अंततः महिलाओं को शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार बना देता है।

यह उपन्यास अपने शीर्षक में "मरंग गोडा नीलकंठ हुआ" एक पौराणिक कथा के बहुत मार्मिक संदेश को समेटे हुए हैं जिस प्रकार समुद्र मंथन से विष निकलता है और समस्त सृष्टि को बचाने के लिए उसे विष को भगवान शिव अपने कंठ में समाहित करते हैं, ठीक उसी प्रकार 'मरंग गोडा' यूरेनियम खनन के पश्चात उसके विकिरण को झेलने के लिए विवश है। यह क्षेत्र पूरे देश को परमाणु ऊर्जा, बिजली और विकास की चकाचक देने के लिए खुद चुपचाप रेडियोधर्मी विकिरण का भयानक विषपान कर रहा है किंतु त्रासदी यह है कि भगवान शिव के विपरीत, इस आधुनिक नीलकंठ की सुध लेने वाला कोई नहीं है। इस नीलकंठ का कंठ नीला नहीं है बल्कि पूरी तरह से झुलस गया है। उपन्यास में एक स्थान पर लेखिका कहती हैं विकास की कीमत तो देनी ही पड़ती है एक दिन। लेखिका ने अपने उपन्यास में इस प्रश्न को उठाया है -

किसका विकास? कैसा विकास? यह हमारी धरती लोहे के रूप में सोना उगलती है। फिर भी हमारे लोग इतने गरीब? ऊंची पहाड़ियों पर स्थित लौह अयस्क की खदानों और मीलों बरसात में लाल पानी बह कर वर्षों से हमारे खेतों को बर्बाद कर रहा है। प्रदूषण की वजह से इन इलाकों के लोगों की औसत आयु भी कम हो गई है। उसका खामियाजा आज कौन देगा हमें? हमारी इस धरती का लोहा तो निकाल कर चला जाता है देश-विदेश के कल-कारखानों में, दूसरे को समृद्ध करने। हमारे लोगों को क्या मिलता है? वे बदकिस्मत लोग जिन्हें उजाड़ना पड़ा इन खदानों के कारण उनकी पीड़ा का लेखा-जोखा किसी के पास है?

उपन्यास में लेखिका कहती है की तूफान और सुनामी जैसी आपदाओं को दरकिनार करके महाराष्ट्र के जैतपुर जैसे समुद्र तटीय इलाके में दुनिया का सबसे बड़ा परमाणु संयंत्र बनाने की तैयारी चल रही है। यदि लोग विरोध करते हैं तो उनकी आवाज को दबा दिया जाता है। तमिलनाडु के कुडनकुलम में लगाए जा रहे परमाणु संयंत्र को लेकर भी स्थानीय लोग चिंतित हैं। जितनी देश-विदेश में परमाणु संयंत्रों की संख्या बढ़ेगी उनके बाइ प्रोडक्ट से बनने वाले परमाणु बमों के निर्माण का खतरा भी उसी अनुपात में बढ़ता जाएगा। लेखिका चिंता व्यक्त करते हुए कहती है कि विश्व भर में इन दिनों जो हालात हैं कि गलत हाथों में परमाणु बम का चले जाना भी असंभव नहीं है। यदि किसी गलत हाथ में परमाणु बम का प्रयोग कर दिया तो धरती से जीवन का नामो निशान मिट जाएगा। फिर से हिम युग आ जाएगा चारों तरफ बर्फ ही बर्फ होगी। सबको पता है कि परमाणु बम से जो रसायन निकलता है उससे पानी जहरीला हो जाता है। परमाणु बमों के विस्फोट से पृथ्वी के चारों ओर जिस धुंध का निर्माण होगा वह सूरज की किरणों को वर्षों तक धरती पर पहुंचने नहीं देगा। यदि पृथ्वी पर धूप ही नहीं रहेगी तो पेड़-पौधे अपना भोजन कहां से बनाएंगे और भोजन नहीं बना पाएंगे तो वह मर जाएंगे। पेड़-पौधे ही ऑक्सीजन छोड़ते हैं, यदि धरती पर ऑक्सीजन नहीं रहेगा तो इंसान सांस कैसे लेगा? बाहर बम के विस्फोट से बिजली के सभी उपकरण नष्ट हो जाएंगे, पूरी धरती अंधकारमय हो जाएगी। सब कुछ ठप हो जाएगा। जिस प्रगति को इंसान में छोटे-छोटे कदमों से प्राप्त किया है, किसी की सनक की वजह से वह पल भर में खत्म हो सकती है। मनुष्य को विकास के दम्भ में यह नहीं भूलना चाहिए की प्रकृति से छेड़छाड़ महंगी पड़ सकती है। लेखिका ने इसमें चीन द्वारा प्रकृति से छेड़छाड़ को उदाहरण के रूप में दिया है “हाल के कुछ वर्षों में चीन पर कुदरत के कई बड़े हमले हुए। दरअसल पिछले कुछ सालों से चीन प्रकृति को अपने हिसाब से ढालने की कोशिश कर रहा है। चीन ने अपने यहां आयोजित ओलंपिक खेलों के समय सिल्वर आयोडाइड क्रिस्टल भरे गोले छोड़कर बादलों को दूर भगाया था। उसके बाद ही भयंकर अकाल पड़ा। जब उसने बारिश करवाने के लिए आसमान में गोले दागे तब भयंकर बर्फबारी हुई, उसके बाद भयंकर बाढ़ आई। यह महज इत्तेफाक नहीं है। चीन के पड़ोसी देश परेशान हैं। चीन ने पहाड़ तोड़कर नदी के लिए नया रास्ता बनाया इससे उत्तर कोरिया में संकट में बढ़ गया। लेह में अस्वाभाविक रूप से बादल फटने पर जो भयंकर तबाही हुई, उसके लिए भी चीन के वेदर बम पर शक किया जा रहा है।”⁴

निष्कर्ष - महुआ माजी का यह उपन्यास केवल एक क्षेत्रीय समस्या को ही नहीं उठाता, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर चल रहे ‘विकास बनाम पर्यावरण’ की बहस का एक ज्वलंत घोषणा पत्र है। यह उपन्यास इस कड़वी सच्चाई को सामने लाता है की किस तरह हासिए के समाज की बलि देकर पूंजीवाद अपने जरूरत को पूरा करता है। लेखिका विकास विरोधी नहीं है, बल्कि वह एक ऐसे मॉडल की बात करती है जिसमें प्रकृति का सम्मान हो, स्थानीय निवासियों के अधिकारों की रक्षा हो और आने वाले पीढ़ी का भी भविष्य सुरक्षित हो। यह उपन्यास केवल काल्पनिक उपन्यास नहीं है बल्कि हमारे आत्मघाती समय का एक बेहद जरूरी चीखता हुआ और अनिवार्य पर्यावरणीय घोषणा पत्र है। यह उपन्यास हमें बहुत कड़े शब्दों में चेतावनी देता है की प्रकृति और मनुष्य दो अलग-अलग या एक दूसरे की विरोधी सत्ताएं नहीं हैं बल्कि प्रकृति एक वृहद शरीर है और मनुष्य उसकी एक छोटी सी कोशिका।

प्रकृति पर किया गया प्रहार, हर कुल्हाड़ी, हर परमाणु विस्फोट अंततः मनुष्य के विनाश का कारण बनता है। उपन्यास में लेखिका कहती हैं की विकास को बंद नहीं किया जा सकता है पर अपनी जरूरत को कम करके हम प्रकृति के साथ तालमेल बैठाकर अपना जीवनयापन कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ:

- 1.माजी महुआ, मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं.158
- 2.माजी महुआ, मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं.159

- 3.माजी महुआ, मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं 160
- 4.माजी महुआ, मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ सं 402
- 5.एम गौड़ा डा नामदेव, एस पाटिल डा शकुंतला, समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण बोध, सप्तराईडिया
- 6.कोल्हारे दत्ता, हिंदी साहित्य में पर्यावरणीय संवेदना, समसामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
7. इल्लत हेब्बार डॉ प्रभाकरन, पर्यावरण और समकालीन हिंदी साहित्य, वाणी प्रकाशन

ई-पत्रिका -

- 1.शोध-उत्कर्ष,अंक 9, जनवरी -मार्च 2025